School of Humanities
U.P.Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

Certificate

I hereby declare that the short synopsis **"प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन"** being submitted in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in **Journalism and Mass Communication** under the **School of Humanities,** U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year **2022-2023**. It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of **Dr. Satish Chandra Jaisal** and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

LNSharma. 27.05.2025

(LAXMI NARAYAN SHARMA)
(Enrol.No.: 2100401)

Research Supervisor & Co-Supervisor (If any)

(Dr. Satish Chandra Jaisal)
Faculty of Journalism and Mass Communication

(Prof. Satyapal Tiwari)
(Director, School of Humanities)

27/05/25

(Prof. P. K. Pandey)
(Director, R&D Cell

प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Journalism and Mass Communication

to

U.P.Rajarshi TandonOpenUniversity, Prayagraj

by

Laxmi Narayan Sharma
Enroll. No. 2100401

Under the Supervision of

Dr. Satish Chandra Jaisal
Faculty of Journalism and Mass Communication

School of Humanities
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipuram (Sector–F), Phaphamau, Prayagraj–211013

ABSTRACT (सार):

स्वास्थ्य को सर्वोत्तम धन मानने की लोकप्रिय अवधारणा ने दुनिया भर की शासन प्रणालियों का ध्यान इस बात पर केंद्रित किया है कि वे नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ। स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों की उपलब्धता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के विस्तार से स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार हो रहा है। भारत में नागरिकों के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में अग्रसर सरकार ने आयुष्मान भारत योजना की शुरुआत की है, जिसके मुख्य घटक पीएम-जय के माध्यम से देश की बड़ी निःशक्त जनसंख्या को गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए प्रति परिवार प्रति वर्ष पांच लाख रुपये का स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जा रहा है। योजना के लाभार्थी वर्ग को निरंतर विस्तारित किया जा रहा है। आयुष्मान भारत योजना के अन्य घटकों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ करने, स्वास्थ्य सेवाओं के ढाँचे को सशक्त बनाने और नागरिकों का डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड तैयार करने का कार्य किया जा रहा है। आम लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों तक सूचनाएँ पहुँचाने में जनसंचार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश की जनसंख्या का एक विशाल हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और उसे स्वास्थ्य से सम्बंधित योजनाओं के बारे में कितनी जानकारी प्राप्त हो रही है, यह जानना आवश्यक है। आयुष्मान भारत योजना से जुड़ी जानकारियों के प्रसार और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में जनसंचार माध्यम किस सीमा तक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं, प्रस्तुत अध्ययन में इस बात को जानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में प्रयागराज जनपद को चयनित किया गया है और ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या को अध्ययन के केंद्र में रखा गया है। "प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर जनसंचार माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण कर संचार रणनीति में अपेक्षित परिवर्तन कर अधिक से अधिक ग्रामीण जनसंख्या तक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों और आयुष्मान भारत योजना के बारे में जानकारी पहुँचाकर सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी।

Keywords : स्वास्थ्य सन्देश, ग्रामीण क्षेत्र, जनसंचार माध्यम, स्वास्थ्य अभियान, आयुष्मान भारत योजना।

CONTENTS

Sr. No.	Description	Page No.
1	Introduction	5-8
2	Literature Review	8-10
3	Description of the Broad Area	10-11
4	Objectives of the Study	12
5	Research Methodology	12-14
6	Expected Outcome of the Research	14-15
	References	
	Plagiarism Report	

1. Introduction (प्रस्तावना):

परंपरागत रूप से यह माना जाता रहा है कि मनुष्य के जीवन निर्वाह के लिए भोजन, वस्त्र और आवास मूलभूत आवश्यकताओं में सम्मिलित है। जनता द्वारा निर्वाचित सरकारें नागरिकों तक इन मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कई तरह की योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से प्रयास करती रही हैं। कालांतर में जन कल्याणकारी राज्य की अवधारणा में शिक्षा और स्वास्थ्य की सुविधायें भी मूलभूत आवश्यकताओं के रूप में मान्य थीं। सरकारों ने शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से नागरिकों को सुविधाओं से आच्छादित करने के लिए अधिनियमों और कार्यक्रमों के द्वारा प्रयास किये। सरकारें खाद्य सुरक्षा अधिनियम, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना जैसे कार्यक्रम के रूप में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर को बेहतर करने के प्रयास करती रही हैं।

जन कल्याणकारी योजनाओं से जनता को लाभान्वित करने और लाभार्थियों तक योजनाओं से जुड़ी जानकारी उपलब्ध कराने में जनसंचार माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। जनसंचार माध्यमों को लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ माना जाता है और यह भी स्पष्ट है कि इनके सही उपयोग के द्वारा वांछित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। भारत में पल्स पोलियो अभियान की सफलता संचार माध्यमों के सार्थक उपयोग का एक जीवंत उदाहरण है। भारत सरकार द्वारा पोलियो उन्मूलन के लिए मीडिया अभियान की रणनीति बनाकर जन सामान्य में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया गया, जिसका प्रत्यक्ष परिणाम हमारे सामने है कि आज भारत पोलियो मुक्त हो चुका है। वर्तमान समय में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से लड़ने में संचार माध्यमों एवं स्वास्थ्य संदेशों की उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता।

भारत जैसे देश, जहाँ ग्रामीण परिवेश में रहने वालों की संख्या अधिक है, ऐसे में ग्रामीण परिवेश के लोगों का जीवन स्तर ऊपर उठाने में मूलभूत आवश्कताओं जैसे- रोटी, कपड़ा और मकान के साथ ही स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी सुविधाओं की उपलब्धता और इनके प्रति स्थानीय समुदाय की जागरूकता भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को उत्तम स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ ही स्वास्थ्य को लेकर उनकी जागरूकता बढ़ाना भी एक बड़ी चुनौती

है, जिसे परंपरागत रूप से अंतर–वैयक्तिक संचार और समूह–संचार के माध्यमों के अलावा जनसंचार माध्यमों का उपयोग कर किया जा रहा है।

जनसंचार वह संचार है, जिसमें सूचना सम्प्रेषण विस्तृत क्षेत्र में बिखरे लोगों तक जनमाध्यमों के द्वारा पहुँचती है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार जन का अभिप्राय पूर्णरूप से व्यक्तिवादिता या व्यक्तिगत पहचान के उन्मूलन से है। इस प्रकार जनसंचार विस्तृत क्षेत्र में फैले श्रोताओं तक एक समय में जनमाध्यमों द्वारा सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया है।

जनसंचार माध्यम संदेशों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करते रहें हैं। जनसंचार माध्यम नये ज्ञान को तकनीकी के सहारे व्यापक जनसमूह तक पहुँचाकर उनके ज्ञान के स्तर को बढ़ाते हैं। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के साथ ही अब इंटरनेट भी जनसंचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। जोसेफ डिनिटी के अनुसार – "जनसंचार बहुत से व्यक्ति में एक मशीन के माध्यम से सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों को रूपान्तरित करने की प्रक्रिया है।"

जहाँ तक ग्रामीणों को जागरूक बनाने और नई सूचनाएं उपलब्ध कराने का प्रश्न है एवं इन सूचनाओं की उपलब्धता का ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के जीवन पर कितना असर देखने को मिलता है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है। आबादी का एक हिस्सा ऐसा भी है, जहाँ सन्देश पहुँच तो रहे हैं लेकिन वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पा रहे हैं। कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहाँ स्वास्थ्य से जुड़े संदेशों की उपलब्धता नगण्य है। ऐसे स्थानों के लोगों की स्वास्थ्य के प्रति समझ और जागरूकता में कमी है। स्वास्थ्य सुविधाएं संतोषजनक नहीं हैं एवं सुविधाएं तथा सामाजिक सेवायें समान रूप से वितरत नहीं हैं, (ए.के. सिंह, 2020)। सामाजिक संदेशों के प्रसार के लिए टेलीविजन को एक प्रभावी माध्यम माना जाता है, (मो० शेख एवं साजिद मुनव्वर, 2020)। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले बहुत सारे लोग अभी भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जागरूक नहीं हैं, (के. सुरेन्द्र, 2015)।

स्वास्थ्य से जुड़ी आधारभूत आवश्यकताओं को उपलब्ध कराने के लिए देश भर

में स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्रों की स्थापना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के दृष्टिगत सरकार ने जिन योजनाओं और कार्यक्रमों को संचालित किया है, उनमें से एक महत्वपूर्ण योजना है – आयुष्मान भारत योजना। देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, इस कारण यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। वर्ष 2018 में आयुष्मान भारत योजना को पूरे देश में लागू किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों तक योजना के बारे में व्यापक जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से जनसंचार माध्यमों का व्यापक पैमाने पर उपयोग किया गया और इससे सरकार को काफी सफलता भी मिली। वर्तमान समय में ग्रामीण परिवेश में रहने वाले लोगों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता और इसमें जनसंचार माध्यमों की भूमिका को जानने की आवश्यकता है। जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कर भविष्य के लिए स्वास्थ्य से जुड़ी संचार रणनीतियों को तैयार करने में सहायता ली जा सकती है।

अनुसंधान प्रश्न–

शोध विषय पर मंथन करते हुए अनुसंधानकर्ता के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न हुए जिनका उत्तर प्राप्त करना अति आवश्यक है। शोधकर्ता के मन में जो प्रश्न आये हैं एवं शोध के माध्यम से जिनका उत्तर प्राप्त करना चाहते हैं वे निम्न हैं–

- प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य कार्यक्रमों और योजनाओं के प्रति जागरूकता की स्थिति क्या है?
- ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोग स्वास्थ्य से जुड़े संदेशों को प्राप्त करने के लिए किन जनसंचार माध्यमों पर निर्भर हैं?
- सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं और जनसंचार माध्यमों के जागरूकता एवं प्रचार अभियान का ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है?
- सरकार के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य अभियानों के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों के जागरूकता की स्थिति कैसी है?
- ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षित और अशिक्षित लोगों में स्वास्थ्य कार्यक्रमों और योजनाओं के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर क्या है?

- ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले स्त्री और पुरुषों में स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में जनसंचार माध्यमों की क्या भूमिका है ?
- ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीणों की जागरूकता का स्तर क्या है ?
- ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में जनसंचार माध्यमों की क्या भूमिका है ?

समस्या कथन –

प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी स्वास्थ्य से जुड़े जन कल्याणकारी कार्यक्रमों, विशेष रूप से – आयुष्मान भारत योजना से जुड़ी मूलभूत जानकारियों की समुचित पहुंच नहीं है और जनसंचार माध्यमों की पहुंच अपेक्षाकृत कम है। सरकार के प्रचार अभियानों, गैर सरकारी संस्थाओं के अभियान और जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रेषित संदेशों की दूरस्थ क्षेत्रों में पर्याप्त उपलब्धता नहीं है। जिन स्थानों पर सूचनाओं और संदेशों की उपलब्धता अपर्याप्त है, वहां जागरूकता का अभाव है।

उपरोक्त आधार पर एवं समय की मांग के अनुसार शोधकर्ता द्वारा अधोलिखित शोध विषय निर्धारित किया गया है – **''प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन''**

2. Literature Review (साहित्य समीक्षा):

गुप्ता एवं सिन्हा (2009) ने "हेल्थ कवरेज इन मास मीडिया : .ए कंटेंट एनालिसिस" (Health coverage in Mass Media : A Content Analysis) शीर्षक के अंतर्गत शोध किया। इस शोध हेतु रेडियो के कार्यक्रमों और समाचार पत्रों का चयन किया गया था। यह शोध भारत के चण्डीगढ़ में आयोजित किया गया। यह शोध 2007–08 के दौरान किया गया था। इस शोध में पाया गया कि अंग्रेजी दैनिक 'दी ट्रिब्यून' में शीतकाल में स्वास्थ्य से संबंधित 22.96 प्रतिशत, बसंत ऋतु में 16.52 प्रतिशत, ग्रीष्मकाल में 30.44 प्रतिशत तथा वर्षा ऋतु में 26.08 प्रतिशत लेख

प्रकाशित किए गए थे। इसी प्रकार से हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक भास्कर में शीतकाल में 31.62 प्रतिशत, बसंत ऋतु में 24.68 प्रतिशत, ग्रीष्मकाल में 21.08 प्रतिशत और वर्षा ऋतु में 22.68 प्रतिशत लेख प्रकाशित किए गए।

ए. के. (2010) ने "कवरेज ऑफ डेवलपमेंट न्यूज इन प्रिंट मीडिया : ए कंटेंट एनालिसिस" (Coverage of Development News in Print Media : A Content Analysis) के अंतर्गत शोध किया था। यह शोध जून-जुलाई 2010 में प्रकाशित दैनिक हिन्दुस्तान के निदर्शन के आधार पर किया गया। इस शोध के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, ग्रामीण विकास, शहरी विकास और पर्यावरण के विषयों को शामिल किया गया। शोध में पाया गया कि कोई भी समाचार सूचनात्मक नहीं है। इसके साथ ही साथ विकास से संबंधित कोई भी नियमित स्तंभ नहीं है।

के. सुरेंद्र (2015) ने "हेल्थकेयर इंफर्मेशन टू रूरल पीपुल इन आंध्रा प्रदेश विद स्पेशल रेफरेंस टू चित्तूर डिस्ट्रिक्ट" (Healthcare information to rural people in Andhra Pradesh with special reference to Chittoor district) शीर्षक से हुए शोध में पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 61.96 प्रतिशत लोग हेल्थकेयर सूचनाओं के महत्व को नहीं जानते। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले 56.53 प्रतिशत लोग प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जागरूक नहीं थे।

एस० गोयल (2017) ने "कन्ट्रीब्यूशन ऑफ पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग इन डेवलपमेंट कम्युनिकेशन ए स्टडी ऑफ कल्याणी हेल्थ प्रोग्राम टेलीकास्ट ऑन दूरदर्शन" (Contribution of public service brodcasting in development communication A study of Kalyani health programme telecast on Doordarshan) शीर्षक से किये शोध में दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले कल्याणी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन किया और महिलाओं पर इसका सकारात्मक प्रभाव पाया।

ए० के० सिंह (2020) ने "हेल्थ केयर फैसिलिटीज एंड देयर यूटिलाइजेशन इन अलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट" (Health care facilities and their utilization in Allahabad district) शीर्षक के अंतर्गत शोध किया। शोध में प्रयागराज जनपद में उपलब्ध सुविधाओं को असंतोषजनक पाया गया। शोध में यह भी पाया गया कि स्वास्थ्य सुविधाओं सहित कोई भी सामाजिक सेवाएं समाज में समान रूप से वितरित नहीं हो रही हैं।

मो० शेख एवं साजिद मुनव्वर (2020) ने "ए स्टडी ऑफ सोशल

एडवर्टाइजमेंट्स एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन रूरल एरिया ऑफ नांदेड़ डिस्ट्रिक्ट" (A Study of social advertisements and its impact on rural area of Nanded district) शीर्षक से किये शोध में पाया कि 90.83 प्रतिशत उत्तरदाता सामाजिक विज्ञापनों से अवगत थे जबकि 09.17 प्रतिशत उत्तरदाताओं को इस बारे में जानकारी नहीं थी। यह भी पाया गया कि 82.92 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि सामाजिक संदेशों के प्रसारण के लिए टेलीविजन सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम है जबकि 17.08 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि टेलीविजन सामाजिक संदेशों के प्रसार का अधिक प्रभावी माध्यम नहीं है।

संजय पोखरियाल (2022, मई 05) ने जागरण वेबसाइट पर "आयुष्मान योजना : सेहत संग बचत की संजीवनी, निम्न आय वर्ग के लोगों को मिल रही राहत" शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट में बताया कि वर्ष 2020 में योजना के दो वर्ष पूरे होने के समय तक आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार इस योजना से देश के निम्न आय वर्ग के लोगों को 30,000 करोड़ रुपये की बचत हो चुकी है। यह योजना इस समय देश के 33 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लागू है और इससे 23,000 से अधिक सरकारी वा निजी अस्पताल जुड़ चुके हैं।

3. Description of the Broad Area (व्यापक क्षेत्र का वर्णन):

21 वीं शताब्दी में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाओं को विस्तार देने के बहुत सारे प्रयासों के बाद भी अभी बहुत सी समस्याएं बरकरार हैं। एक ओर स्वास्थ्य पेशेवरों और संसाधनों की कमी है तो दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता शहरी क्षेत्रों के निवासियों की अपेक्षा काफी कम है। यही कारण है कि ग्रामीण अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति लापरवाह रहते हैं। सरकार जिन सुविधाओं और कार्यक्रमों को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाना चाहती है, वे पूरी तरह उन तक नहीं पहुंच पाते। इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लेकर उनमें जागरूकता की कमी है। जिन स्थानों पर जागरूकता का स्तर बेहतर है, वहां ग्रामीण क्षेत्रों के लोग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के प्रति ग्रामीणों को जागरूक कर और ग्रामीणों के लिए सरकार की ओर से चलाये जा रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों की जानकारी जनसंचार माध्यमों की मदद से उन तक पहुंचा कर समस्याओं का हल निकाला जा सकता है।

सरकार ने देश की आर्थिक रूप से कमजोर आबादी को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं

प्रदान करने के उद्देश्य से जो कार्यक्रम चलाये हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है आयुष्मान भारत योजना। इस योजना के बारे में जनसंचार माध्यमों की मदद से ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाकर अधिक से अधिक पात्रों को योजना का लाभ दिलाया जा सकता है। कोरोना वैश्विक महामारी के इस कालखण्ड में इस अध्ययन की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है।

स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरुकता के प्रसार के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारें सदा से ही कृतसंकल्प रही हैं। गौरतलब है कि जनसंचार माध्यमों के द्वारा स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार किया जाता है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में वर्तमान तकनीकी युग में भी आज जनमानस में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता की कमी है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने हेतु जनसंचार माध्यमों की भूमिका के उपयोग को बढ़ाना श्रेयस्कर होगा। प्रस्तुत शोध का महत्व इसी में है कि इसके द्वारा आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीणों की जागरुकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन किया जा सकेगा।

वर्तमान परिस्थितियों में जहां केन्द्र तथा राज्य सरकारें संयुक्त रूप से प्रयास कर आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों को आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने की कोशिश कर रही हैं और स्वास्थ्य संरचनाओं के विस्तार का प्रयास कर रही हैं तो ऐसे में जनमाध्यमों के द्वारा गग्रमीणों को जागरुक कर इन सुविधाओं की जानकारी उपलब्ध कराकर योजना की सफलता को बढ़ाया जा सकता है। योजना का लाभ लेने में आ रही समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सरकार द्वारा उनके निराकरण की रणनीति तैयार की जा सकती है।

उपरोक्त आधार पर स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध विषय समय की मांग के अनुसार शोध हेतु एक उपयुक्त विषय सिद्ध होगा।

अध्ययन से सामाजिक लाभ– अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का भविष्य में भारत सरकार, राज्य सरकार, आईसीएमआर या स्वास्थ्य विभाग द्वारा इनका उपयोग करते हुए आसानी से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रम को लेकर जागरुकता की रणनीति तैयार करने में मदद ली जा सकती है।

4. Objectives of the Study (अध्ययन के उद्देश्य):

1. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संदेशों की उपलब्धता एवं ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

2. स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम की उपलब्धता एवं ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति सजगता का अध्ययन करना।

3. जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता एवं ग्रामीणों तक स्वास्थ्य सम्बन्धी संदेशों की पहुंच का अध्ययन करना।

4. ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता एवं ग्रामीणों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

5. ग्रामीण पुरूषों एवं महिलाओं में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

6. उच्च शिक्षित ग्रामीण पुरूषों एवं अल्प शिक्षित ग्रामीण पुरूषों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

5. Research Methodology (शोध पद्धति):

जनसंख्या– प्रयागराज जनपद की समस्त ग्राम पंचायतें।

आंकड़ा संग्रहण विधि– इसके लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रयुक्त उपकरण– अनुसंधान हेतु आकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–

- साक्षात्कार अनुसूची
- अवलोकन अनुसूची
- प्रश्नावली

आंकड़ों के स्रोत–

निम्न स्रोतों से आंकड़ों का संग्रहण किया जायेगा–

प्राथमिक स्रोत– ग्रामीणों से अनुसूची के माध्यम से प्राप्त आंकड़ें।

द्वितीयक स्रोत– सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं के कार्यालय अभिलेखों द्वारा उपलब्ध आंकड़े।

न्यादर्श और न्यादर्शन प्रविधि –

N.S.Sharma

सामाजिक एवं व्यावहारिक विज्ञानों में कोई भी अनुसंधान समग्र की समस्त इकाई पर करना प्रायः सम्भव नहीं होता है, क्योंकि विस्तृत क्षेत्रों में फैली हुई समग्र की प्रत्येक इकाई से सम्पर्क करना प्रायः कठिन होता है। समय, श्रम और धन की सीमाओं के कारण समग्र से पर्याप्त इकाईयों का चयन कर लिया जाता है। ये चयनित इकाईयां प्रतिदर्श का निर्माण करती है और समग्र का समुचित प्रतिनिधित्व करती हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में 400 ग्रामीणों का चयन प्रतिदर्श के रूप में आंकड़ों के संकलन हेतु किया जायेगा। अतः वैज्ञानिक आधार पर विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु सामान्य दैव निदर्शन प्रणाली पर आधारित होकर प्रयागराज जनपद के 23 में से 04 विकास खण्डों का चयन किया जायेगा। चयनित विकास खण्डों के कुल ग्राम पंचायतों में से सामान्य दैव निदर्शन प्रणाली के आधार प्रत्येक विकास खण्ड से 05-05 ग्राम पंचायतों (कुल 20 ग्राम पंचायत) का चयन किया जायेगा। इसी प्रकार उद्देश्यपूर्ण दैव निदर्शन विधि पर आधारित होकर चयनित 20 ग्राम पंचायतों से निदर्शन के रूप में प्रत्येक गांव से 20-20 प्रतिदर्श का चयन किया जायेगा। प्रतिदर्श में लगभग 50 प्रतिशत संख्या स्त्रियों की और 50 प्रतिशत संख्या पुरुषों की रहेगी। इस प्रकार कुल प्रतिदर्श 400 होगा, जिनमें पुरुषों की संख्या 200 एवं महिलाओं की संख्या 200 होगी।

आंकड़ा संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण प्रविधि –

उत्तरदाताओं में मात्र साक्षर और कम शिक्षित ग्रामीणों के होने के कारण प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये साक्षात्कार अनुसूची की प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। अध्ययन के दौरान आवश्यकतानुसार द्वितीयक आंकड़ों का संकलन साहित्य सर्वेक्षण, स्वास्थ्य विभाग के कार्यालय अभिलेख, सम्बन्धित सरकारी विभागों की वेबसाईट की मदद से किया जायेगा।

प्रस्तुत शोध में संकलित तथ्यों की प्रकृति के आधार पर संभव सीमा तक सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषित किया जायेगा। आंकड़ों को प्रस्तुत करने हेतु वर्गीकरण एवं सारणीयन की पद्धति का प्रयोग किया जायेगा। संकलित तथ्यों को समानता एवं भिन्नता के आधार पर वर्गीकृत किया जायेगा। इन वर्गीकृत तथ्यों को उनकी

आवृत्तियों के आधार पर सारणीबद्ध कर प्रस्तुत किया जायेगा। तत्पश्चात् आंकड़ों की प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग कर प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा। आवश्यकतानुसार आंकड़ों के विश्लेषण हेतु कम्प्यूटर की सहायता ली जाएगी।

अध्ययन की परिसीमाएं–

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के चयनित ग्राम पंचायत में निवास करने वाले ग्रामीण लोगों से ही प्राप्त आंकड़ों के आधार पर अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त किये जायेंगें।

अध्यायीकरण–

प्रथम– प्रस्तावना
द्वितीय– सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण
तृतीय– पद्धति और प्रक्रियायें
चतुर्थ– विश्लेषण और व्याख्या
पंचम– निष्कर्ष एवं सुझाव
I. संदर्भ ग्रन्थ सूची
II. परिशिष्ट

6. Expected Outcome of the Research (शोध के अपेक्षित निष्कर्ष):

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों के विस्तार और स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के माध्यम से राष्ट्रीय विकास और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव है। प्रस्तुत अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आने का अनुमान है कि प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, सजगता और आयुष्मान भारत योजना के बारे में जानकारियां उपलब्ध कराने में जनसंचार माध्यम किस सीमा तक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जागरूकता को लेकर ग्रामीणों की जानकारी का स्तर कितना है। जनसंचार माध्यमों की अनुपस्थिति की परिस्थिति में

ग्रामीणों की जागरूकता का स्तर कितना है, इस बात की भी जानकारी प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से मिलने की सम्भावना है। जनसंचार माध्यमों के अतिरिक्त अन्य किन माध्यमों से ग्रामीणों को स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलती है, यह जानकारी भी अध्ययन के माध्यम से सामने आ सकने का अनुमान है। अध्ययन के माध्यम से यह परिणाम भी सामने आने का अनुमान है कि स्वास्थ्य जागरूकता के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निःशक्त सामाजिक वर्गो तक कितनी पहुँच है और इसके माध्यम से ग्रामीणों में स्वास्थ्य देखभाल को लेकर किस सीमा तक सजगता उत्पन्न हुयी है। सरकार द्वारा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चलाई जा रही योजनाओं और ग्रामीणों को प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता के बारे में भी जानकारी मिलने का अनुमान है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निःशक्त समुदाय में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता और उनकी आर्थिक स्थिति के बीच के सह संबंध भी सामने आने का अनुमान है। जनसंचार के कौन से माध्यम वर्तमान समय में निःशक्त ग्रामीण जनसंख्या के बीच सुलभ हैं और किन जनसंचार माध्यमों तक उनकी पहुँच नहीं है, यह जानकारी भी प्रस्तुत अध्ययन में सामने आने का अनुमान है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो का उपयोग आयुष्मान भारत योजना के प्रचार–प्रसार और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन के दौरान किया जा सकेगा। स्वास्थ्य विभाग की ओर से अपनाये जाने वाले संचार अभियानों में इन निष्कर्षो के आधार पर अपेक्षित परिवर्तन कर सरकार वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भविष्य में सकारात्मक कदम उठा सकती है।

References:

1. सिंह, प्रो. श्यामधर, (2009), ''वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व'', सपना अशोक प्रकाशन वाराणसी।
2. पाराशर, रामकृष्ण, पाराशर, नकुल, (1992), ''कृषि पत्रकारिता का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष'' हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. तिवारी, डॉ. अर्जुन, (1999), ''कृषि एवं ग्रामीण विकास पत्रकारिता'' संजय बुक सेंटर वाराणसी प्रकाशन।

4. उपाध्याय, डॉ. हरीश चंद्र, (2009), ''सामाजिक सर्वेक्षण, अनुसंधान एवं सांख्यिकी'' एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
5. पाण्डेय, उमा, (2013), ''शोध प्रस्तुति'' एनएचएस प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. जरारे, डॉ. विजय, (1995), ''शोध प्रणाली'' एबीडी पब्लिशर्स, जयपुर।
7. मुखर्जी, रवींद्रनाथ, (2009), ''सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी'' विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली।
8. वोहरा, वंदना, (2009), ''शोध प्रविधि'' ओमेगा पब्लिकेशंस।
9. सिंह, अरुण कुमार, (2016), ''मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ'', मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
10. भानावत, डॉ. संजीव, (2008), ''संचार शोध प्रविधियां'' युनिवर्सिटी बुक हाउस प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर।
11. शर्मा, रामनाथ और शर्मा, राजेंद्र कुमार, (2022), ''सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान की विधियाँ और प्रविधियाँ'' अटलांटिक पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड।
12. एल. वत्ता, बी. एल. ढाका और के. चायल, (2010), ''कन्टेट एनालिसिस ऑफ फार्म मैगजिन'' https://www.scribd.com/document/325508102/A4
13. पोखरियाल, एस. (2022, मई 05). ''आयुष्मान योजना : सेहत संग बचत की संजीवनी, निम्न आय वर्ग के लोगों को मिल रही राहत'' : जागरण. https://www.jagran.com/news/national-ayushman-yojana-relief-for-low-income-group-people-jagran-special-22685955.html
14. Babu, K, Surendra, (2015), 'Health care information to rural people in Andhra Pradesh with special reference to Chittoor district.' Phd thesis. Sri Venkateswara University.
15. Vidanapathirana J, Abramson MJ, Forbes A, Fairley C. Mass media interventions for promoting HIV testing. Cochrane Database Syst Rev. 2005 Jul 20;(3):CD004775. doi: 10.1002/14651858.CD004775.pub2. PMID: 16034948.
16. Wei C, Herrick A, Raymond HF, Anglemyer A, Gerbase A, Noar SM. Social marketing interventions to increase HIV/STI testing uptake among men who have sex with men and male-to-female transgender women. Cochrane Database Syst Rev. 2011 Sep 7;2011(9):CD009337. doi: 10.1002/14651858.CD009337. PMID: 21901734; PMCID: PMC11994256.

Lrsharma.

17. Huttner B, Goossens H, Verheij T, Harbarth S. (2010). Characteristics and outcomes of public campaigns aimed at improving the use of antibiotics in outpatients in high-income countries. The Lancet Infectious Diseases. Naranbhai V, Abdool Karim Q, Meyer-Weitz A. Interventions to modify sexual risk behaviours for preventing HIV in homeless youth. Cochrane Database of Syst Rev.
18. Singh, Amit Kumar, (2020) 'Health care facilities and their utilisation in Allahabad district'. Phd thesis. Banaras Hindu University.
19. Shaikh Mohammad Sajed Mohammad Munawar, (2020) 'A study of social advertisements and its impact on rural area of Nanded district'. Phd thesis. Swami Ramanand Teerth Marthwada University.
20. Zeller, H. & Mohan J. Dutta. (2008). Emerging perspectives in Health Communication : meaning, culture, power. Newyork : Routledge.
21. https://ayushmanbharat.mp.gov.in/about-us

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language Hindi

Submission Information

Author Name	Laxmi Narayan
Title	synopsis
Paper/Submission ID	3677053
Submitted by	sjaisal@uprtou.ac.in
Submission Date	2025-05-27 11:54:02
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity **2%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File

DrillBit

DrillBit Similarity Report

2	5	A	A-Satisfactory (0-10%) B-Upgrade (11-40%) C-Poor (41-60%) D-Unacceptable (61-100%)
SIMILARITY %	MATCHED SOURCES	GRADE	

LOCATION	MATCHED DOMAIN	%	SOURCE TYPE
1	Paper Submitted to Banaras Hindu University	1	Student Paper
2	Paper Submitted to Lalit Narayan Mithila University, Darbhanga	<1	Student Paper
3	Paper Submitted to Jananayak Chandrashekhar University	<1	Student Paper
4	Thesis Submitted to Shodhganga, shodhganga.inflibnet.ac.in	<1	Publication
5	Paper Submitted to Bhupendra Narayan Mandal University, Madhepura	<1	Student Paper

Lrsharma.

5ला00] ए निपाधाएंपीं€5 एस पक्षावणा 0फटा (पांष्टा'भडि, रि'व8छा' 8] (८ पंप 86 [हा ताक पका पी डी छा ए0085
*प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन" 0लं02 5प्रजाएं (6 फा 9क्षाव णिपिपाला। 0 फिट ९पुर्घाशाला। छिए ९ तैस्डाह९ 02007 0 गिप0500 हा त0प्राताशडिता शात चघ55 (:0ाएंटवणा पातटा फिट 500 ए विपााापिंट, [.रि, रिवांधाडाां पक्षातंणा (फूला (ाच्टाडा, शिवक8् ाशुं तपाताइ पट 80802ंट कटा 2022-2023. प '5 8 0णाधतिट 6000 एव 08 कण; टक्षांहते 0 पाल फिट डप्फटाएंडाणा एव फि. 58्जी (ीश्ाताश चैक्षां5नं काते ॥85 0 0टटा पाजाएं (6 ता लि 0 08 0 शाफ ०0 प् ांध्लाझांछि 0 नधपट छिए 8 तंटाट९ 0 तीफ।णिए8. पर्रापि, व 5 ८टलापपिटित 8 फ€ डा 50055 5 8 क्षांजा-रिर€ घातँ पट क€]007 985 066 इज 60. (जानी हार १2९ डारानै) (छिपा, ०: 200407) रिह5हक् ाए 3प्फूलाशं50 & ('0-5पफूहाशंडणा (व काफी (7. 58जी (गाक्षाताथ वंांड8) सिवा एव०प्ाताशडिा भाएँ छ855 (20ापाएं वीणा (एर्ण, 5घ्ाकवफु पपंफिकाए) (एस्ल्लं०, 5टा००ी 0 निपााशाीरड) (एिर्ण, ९. हि. एकातंट (एफल्लण, रि&फ एला 2 प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन 5नणरा 5१+४0०९१७5 पावर व कवीवा ीपिटता सा 02 2कूवाएटशारता सर वाह थी 0000२ 0 एक. 050४ का नै०प्रापाधाडता करा तवक्र55 ((०ताताघ्तांलवांगत 0 (7.70 उघतब०ा 0027 एए2/डाफ, उपाय फ्फ वदडतां चिकना का औक्षापाव काकणों, चि०, 200407 एल फिर 5प्फूलापंडंणा 0 एि, 5ज्चानी। (पीघ्ाताश वश्चांडघां कबट्ाए स्राव करार ैक्ड (एलातापरधांट्वींित 5000] ए सिवा €5 ए.ए. हिक्ुधा नं पाएगा 0फूटा (पांएटा'डंडि जडोक्षापीकृपा शा (5९८00), शिवफकृषक्षाप, रिक्षर8छाथं-203 3 औ85पार&('

(सार): स्वास्थ्य को सर्वोत्तम धन मानने की लोकप्रिय अवधारणा ने दुनिया भर की. शासन प्रणालियों का ध्यान इस बात पर केंद्रित किया है कि वे नागरिकों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ उपलब्ध कराएँ। स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों की उपलब्धता और स्वास्थ्य के प्रति. जागरूकता के विस्तार से स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार हो रहा है। भारत में नागरिकों के लिए सार्वभौमिक स्वास्थ्य. कवरेज की. दिशा में अग्रसर सरकार ने आयुष्मान भारत योजना की. शुरुआत की है, जिसके मुख्य घटक पीएम-जय के माध्यम से देश की बड़ी निःशक्त जनसंख्या को गंभीर बीमारियों के उपचार के लिए प्रति परिवार प्रति वर्ष पांच लाख रूपये का स्वास्थ्य बीमा प्रदान किया जा रहा है। योजना. के. लाभार्थी, वर्ग, को निरंतर विस्तारित. किया. जा. रहा. है। आयुष्मान. भारत योजना के अन्य घटकों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य. सेवाओं को सुदृढ़ करने, स्वास्थ्य सेवाओं के ढाँचे को सशक्त बनाने और नागरिकों का डिजिटल हेल्थ रिकॉर्ड तैयार करने का कार्य किया जा रहा है। आम लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने और आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों तक सूचनाएँ पहुँचाने में जनसंचार माध्यम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। देश की जनसंख्या का एक विशाल हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है और उसे स्वास्थ्य से सम्बंधित योजनाओं के बारे में कितनी जानकारी प्राप्त हो रही है, यह जानना आवश्यक है। आयुष्मान भारत योजना से जुड़ी जानकारियों के प्रसार और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता में जनसंचार माध्यम किस सीमा तक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं, प्रस्तुत अध्ययन में इस बात को जानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन क्षेत्र के रूप में प्रयागराज जनपद को चयनित किया गया है और ग्रामीण क्षेत्र की जनसंख्या को अध्ययन के केंद्र में रखा गया है। "प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के . प्रति. जागरूकता एवं. जनसंचार माध्यमों की. भूमिका. का. अध्ययन" शीर्षक के अंतर्गत शोध से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर जनसंचार माध्यमों की भूमिका का. विश्लेषण कर संचार रणनीति में अपेक्षित परिवर्तन कर अधिक से अधिक ग्रामीण जनसंख्या तक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों और आयुष्मान भारत योजना के बारे में जानकारी पहुँचाकर सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता मिल सकेगी । िट्प१ 0१0५ : स्वास्थ्य सन्देश, ग्रामीण क्षेत्र, जनसंचार माध्यम, स्वास्थ्य अभियान, आयुष्मान भारत योजना। 4 (0राबाड 57. 065लाफएणा 88९ ०. 0, .. शाफ्0तपलींणा 5-8 2. पिफट्ाधपाट रिटपंटफ 8-0 3... 95लांफंणा एव (९ छिए8 तट 0-] 4. 0छुंब्लाए5 0 फिट 500 2 5. ८5९80 06008 2-4 6... शुषा 00006 ए पीट रिट5टघाएी 4-5 रिटलिटाए5 एा8्डांशराडाा रिलफणा 5 ॥. फवकि0लींणा

(प्रस्तावना): परंपरागत रूप से यह माना जाता रहा है कि मनुष्य के जीवन निर्वाह के लिए भोजन, वस्त्र और आवास मूलभूत आवश्यकताओं में सम्मिलित है। जनता द्वारा निर्वाचित सरकारें नागरिकों तक इन मूलभूत सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कई तरह की योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से प्रयास करती रही हैं । कालांतर में जन कल्याणकारी राज्य. की. अवधारणा में शिक्षा. और स्वास्थ्य की सुविधायें भी. मूलभूत आवश्यकताओं के रूप में मान्य थीं। सरकारों ने शिक्षा और स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रमों और योजनाओं के माध्यम से नागरिकों को सुविधाओं से .आच्छादित करने के लिए अधिनियमों और कार्यक्रमों के द्वारा प्रयास किये। सरकारें खाद्य सुरक्षा अधिनियम, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना, शिक्षा का. अधिकार अधिनियम, प्रधानमंत्री आवास योजना, आयुष्मान भारत योजना जैसे कार्यक्रम के रूप में नागरिकों को मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराकर उनके जीवन स्तर को बेहतर करने के प्रयास करती रही हैं । ' जन कल्याणकारी योजनाओं से जनता को लाभान्वित करने और लाभार्थियों तक योजनाओं. से जुड़ी जानकारी _ उपलब्ध... कराने... में जनसंचार ..

Lvcharme.

माध्यमों .. की... महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। जनसंचार माध्यमों को. लोकतन्त्र का. चतुर्थ स्तम्भ माना जाता है और यह भी स्पष्ट है कि इनके सही उपयोग के द्वारा वांछित परिणाम प्राप्त किये जा सकते हैं। भारत में पल्स पोलियो अभियान की सफलता संचार माध्यमों के सार्थक उपयोग का एक जीवंत उदाहरण है। भारत सरकार द्वारा पोलियो उन्मूलन के लिए मीडिया. अभियान की रणनीति बनाकर जन सामान्य में जागरूकता उत्पन्न करने का प्रयास किया. गया. जिसका प्रत्यक्ष परिणाम हमारे सामने है कि आज भारत पोलियो मुक्त हो चुका है। वर्तमान समय में कोरोना जैसी वैश्विक महामारी से लड़ने में संचार माध्यमों एवं स्वास्थ्य संदेशों की उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता। भारत जैसे देश, जहाँ ग्रामीण परिवेश में रहने वालों की संख्या अधिक है, ऐसे में ग्रामीण परिवेश के लोगों का. जीवन स्तर ऊपर उठाने में मूलभूत आवश्कताओं जैसे- रोटी, कपड़ा और मकान के साथ ही स्वास्थ्य, शिक्षा जैसी सुविधाओं की उपलब्धता. और इनके प्रति स्थानीय समुदाय की. जागरूकता भी. महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को उत्तम स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराने के साथ डी स्वास्थ्य को लेकर उनकी जागरूकता बढ़ाना भी एक बड़ी चुनौती 6 है, जिसे. परंपरागत रूप से अंतर-वैयक्तिक संचार और समूह-संचार के माध्यमों के अलावा जनसंचार माध्यमों का उपयोग कर किया जा रहा है। जनसंचार वह संचार है, जिसमें सूचना सम्प्रेषण विस्तृत क्षेत्र में बिखरे लोगों तक. जनमाध्यमों के द्वारा पहुँचती है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के अनुसार जन का अभिप्राय पूर्णरूप से व्यक्तिवादिता या व्यक्तिगत पहचान के उन्मूलन से है। इस प्रकार जनसंचार विस्तृत क्षेत्र में फैले श्रोताओं तक एक समय में जनमाध्यमों द्वारा सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया है। जनसंचार माध्यम संदेशों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने में अपनी भूमिका का निर्वाह करते रहें हैं। जनसंचार माध्यम नये ज्ञान को तकनीकी के सहारे व्यापक. जनसमूह तक. पहुँचाकर उनके ज्ञान के स्तर को बढ़ाते हैं। प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के साथ डी अब इंटरनेट भी जनसंचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। जोसेफ डिनिटी के अनुसार - "जनसंचार बहुत से व्यक्ति में एक मशीन के माध्यम से. सूचनाओं, विचारों और दृष्टिकोणों को. रूपान्तरित करने की प्रक्रिया है।" जहाँ तक ग्रामीणों को. जागरूक बनाने और नई सूचनाएं उपलब्ध कराने का. प्रश्न है एवं इन सूचनाओं की उपलब्धता का ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के जीवन पर कितना असर देखने को मिलता है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है। आबादी का एक हिस्सा ऐसा भी है, जहाँ सन्देश पहुँच तो रहे हैं लेकिन वे अपने उद्देश्य में सफल नहीं हो पा रहे हैं। कुछ क्षेत्र ऐसे भी हैं जहाँ स्वास्थ्य से जुड़े संदेशों की उपलब्धता नगण्य है। ऐसे स्थानों के लोगों की स्वास्थ्य के प्रति समझ और जागरूकता में कमी है। स्वास्थ्य सुविधाएं संतोषजनक नहीं हैं एवं सुविधाएं तथा सामाजिक सेवायें समान रूप से वितरत नहीं हैं, (ए.के. सिंह, 2020)। सामाजिक संदेशों के प्रसार के लिए टेलीविजन को एक प्रभावी माध्यम माना जाता है, (मो0 शेख एवं साजिद मुनव्वर, 2020)। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले बडुत सारे लोग अभी भी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों से मिलने. वाली. सुविधाओं के. बारे में जागरूक नहीं हैं, (के... सुरेन्द्र, 207 5) स्वास्थ्य से जुड़ी आधारभूत आवश्यकताओं को उपलब्ध कराने के लिए देश भर पर में स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्रों की स्थापना और आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लोगों को बीमारियों के इलाज के लिए आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के दृष्टिगत सरकार ने. जिन योजनाओं और कार्यक्रमों को. संचालित किया है, उनमें से एक महत्वपूर्ण योजना है - आयुष्मान भारत योजना। देश की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है, इस कारण यह योजना ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुई है। वर्ष 208 में आयुष्मान भारत योजना को पूरे देश में लागू किया गया। ग्रामीण क्षेत्रों तक योजना के बारे में व्यापक जानकारी पहुंचाने के उद्देश्य से जनसंचार माध्यमों का. व्यापक पैमाने पर उपयोग किया गया. और इससे सरकार को काफी सफलता भी मिली। वर्तमान समय में ग्रामीण परिवेश में रहने. वाले. लोगों में आयुष्मान भारत, योजना के प्रति जागरूकता और इसमें जनसंचार माध्यमों की भूमिका को जानने की आवश्यकता है। 'जनसंचार माध्यमों की. उपयोगिता के बारे में जानकारी प्राप्त कर भविष्य के लिए स्वास्थ्य से जुड़ी संचार रणनीतियों को तैयार करने में सहायता ली जा सकती है। अनुसंधान प्रश्न- शोध विषय पर मंथन करते हुए अनुसंधानकर्ता के मन में अनेक प्रश्न उत्पन्न डुए जिनका उत्तर प्राप्त करना अति आवश्यक है। शोधकर्ता के मन में जो प्रश्न आये हैं एवं शोध के माध्यम से जिनका उत्तर प्राप्त करना चाहते हैं वे निम्न हैं- ०. प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य कार्यक्रमों और योजनाओं के प्रति जागरूकता की स्थिति क्या है ? ०. ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोग स्वास्थ्य से जुड़े संदेशों की प्राप्त करने के लिए किन जनसंचार माध्यमों पर निर्भर हैं ? ०. सरकारी, गैर सरकारी संस्थाओं और जनसंचार माध्यमों. के जागरूकता एवं प्रचार अभियान का ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों पर किस तरह का प्रभाव पड़ता है? ०. सरकार के महत्वपूर्ण स्वास्थ्य अभियानों के प्रति ग्रामीण क्षेत्रों के जागरूकता की स्थिति कैसी है ? ०. ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले शिक्षित और अशिक्षित लोगों में स्वास्थ्य कार्यक्रमों और योजनाओं के प्रति जागरूकता में सार्थक अन्तर क्या है ? 8 ०. ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले स्त्री और पुरुषों में स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं और कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता में जनसंचार माध्यमों की क्या भूमिका है ? ०. ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीणों की जागरूकता का. स्तर क्या है ? ०. ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने में जनसंचार माध्यमों की क्या भूमिका है. ? समस्या कथन - प्रयागराज जनपद के. ग्रामीण क्षेत्रों में अभी शी

स्वास्थ्य से. जुड़े जन कल्याणकारी. कार्यक्रमों, विशेष रूप, से. -. आयुष्मान. भारत. योजना से. जुड़ी मूलभूत जानकारियों की. समुचित पहुंच नहीं है और जनसंचार माध्यमों की पहुंच अपेक्षाकृत कम है। सरकार के प्रचार अभियानों, गैर सरकारी संस्थाओं के अभियान और 'जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रेषित संदेशों की दूरस्थ क्षेत्रों में पर्याप्त उपलब्धता नहीं है। जिन स्थानों पर सूचनाओं और संदेशों की उपलब्धता अपर्याप्त है, वहां जागरूकता का अभाव है। उपरोक्त आधार पर एवं समय की मांग के अनुसार शोधकर्ता द्वारा अधोलिखित शोध विषय निर्धारित किया गया है. - "'प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन" 2. पर टिशप्राє रिस्. संट (साहित्य समीक्षा): गुप्ता एवं सिन्हा. (2009) ने. "हेल्थ कवरेज इन मास मीडिया : ए कर्टेट 'एनालिसिस" (निट८00 ८0४४९ 855 तीं8 : (हा औताब फंड) शीर्षक के अं. तगत शोध किया। इस शोध हेतु रेडियो के कार्यक्रमों और समाचार पत्रों का चयन किया गया. था। यह शोध भारत. के. चण्डीगढ़ में आयोजित किया. गया। यह शोध 2007-08 के दौरान किया गया था। इस शोध में पाया गया कि अंग्रेजी दैनिक *दी. ट्रिब्यून* में शीतकाल में स्वास्थ्य से संबंधित 22.96. प्रतिशत, बसंत ऋतु में 6.52 प्रतिशत, ग्रीष्मकाल में 30.44 प्रतिशत तथा वर्षा ऋतु में 26.08. प्रतिशत लेख 9 प्रकाशित किए गए थे। इसी प्रकार से हिन्दी दैनिक समाचार पत्र दैनिक भास्कर में शीतकाल में 37.62 प्रतिशत, बसंत ऋतु में 24.68 प्रतिशत, ग्रीष्मकाल में 2.08 प्रतिशत और वर्षा ऋतु में 22.68 प्रतिशत लेख प्रकाशित किए गए। ए. के. (2070) ने *कवरेज ऑफ डेवलपमेंट न्यूज इन प्रिंट मीडिया : ए करेंट 'एनालिसिस" (०४886 0 0ट४ट0फपाटा। पिट्फाड ता शिवा ऐटतीं : है (हि औताधपिडोंड) के अंतर्गत शोध किया था। यह शोध जून-जुलाई 2070 में प्रकाशित दैनिक हिन्दुस्तान के निदर्शन के आधार पर किया. गया। इस शोध के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, ग्रामीण विकास, शहरी विकास और पर्यावरण के विषयों को शामिल किया गया। शोध में पाया गया कि कोई भी समाचार सूचनात्मक नहीं है। इसके साथ ही साथ विकास से संबंधित कोई भी नियमित स्तंभ नहीं है। के. सुरेंद्र (205) ने "हेल्थकेयर इंफमिशन टू. रूरल पीपुल इन आंध्रा प्रदेश विद स्पेसल रेफरेंस टू चित्तूर डिस्ट्रिक्ट" (न७800086 800 (0 (08 96006 0 /पाएवाव शि0७5 0 50608 'हैलहिशाए०8 0 (000 पीडंए) शीर्षक से हुए शोध में पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले 6.96. प्रतिशत लोग हेल्थकेयर सूचनाओं के महत्व को नहीं जानते। ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले. 56.53. प्रतिशत लोग प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों से मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जागरूक नहीं थे। एस0. गोयल (207) ने *कन्ट्रीब्यूगन ऑफ पब्लिक सर्विस ब्राइकास्टिंग इन डेवलपमेंट कम्युनिकेशन ए स्टडी ऑफ कल्याणी हेल्थ प्रोग्राम टेलीकास्ट ऑन दूरदर्शन" ((णा0प्रांणा 0. फुपाणांट इललसं०्ट छि०्ते८घ5पाडु का तेटरट0फााहा। एएापापांएकीणा है. डपितेए 0 दावा पट जा0्टाधाशाट (९९८85 0 000र्तक्षाहीक्षा) शीर्षक से किये शोध में दूरदर्शन से प्रसारित होने वाले कल्याणी कार्यकम के प्रभाव का अध्ययन किया और मडिलाओं पर इसका सकारात्मक प्रभाव पाया। 'ए0०. के0 सिंह (2020) ने. *हेल्थ केयर फैसिलिटीज एंड देयर यूटिलाइजेशन इन अलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट" (निध80 टवाє शिल॥प65 क् .एं पाली पा 2्षणा का है। ।व80 तीडिपट) शीर्षक के अंतर्गत शोध किया। शोध में प्रयागराज जनपद में उपलब्ध सुविधाओं को _असंतोषजनक पाया गया। शोध में यह भी पाया गया कि स्वास्थ्य सुविधाओं सहित कोई भी सामाजिक सेवाएं समाज में समान रूप से वितरित नहीं हो रही हैं । मो0 _ शेख एवं. साजिद मुनव्वर _ (2020) ने. *ए. स्टडी ऑफ सोशल 0 'एडवर्टाइजमेंट्स एण्ड इट्स इम्पैक्ट ऑन रूरल एरिया ऑफ नांदेड़ डिस्ट्रिक्ट" (& 50५ एव 5008 8तर्टलाडिशाहाड भाएँ पड पा 980 00 वपाथ आाह8 0 पष्पातस्.त तांडपंए!) शीर्षक से किये शोध में पाया कि 9०.83 प्रतिशत उत्तरदाता सामाजिक विज्ञापनों से अवगत थे जबकि 09.7. प्रतिशत उत्तरदाताओं को इस बारे में जानकारी नहीं थी। यह भी पाया गया कि 82.92 प्रतिशत उत्तरदाता यह मानते हैं कि सामाजिक संदेशों के प्रसारण के लिए टेलीविजन सबसे अधिक प्रभावशाली माध्यम है जबकि 7.08 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने माना कि टेलीविजन सामाजिक संदेशों के प्रसार का अधिक प्रभावी माध्यम नहीं है। संजय पोखरियाल _ (2022, मई 05) ने जागरण वेबसाइट पर "आयुष्मान योजना : सेहत संग बचत की संजीवनी, निम्न आय वर्ग के लोगों को मिल रही. राहत" शीर्षक से प्रकाशित रिपोर्ट में बताया कि वर्ष 2020 में योजना के दो वर्ष पूरे होने के समय तक आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार इस योजना से देश के निम्न आय वर्ग के लोगों को 30,000 करोड़ रुपये की बचत हो चुकी है। यह योजना इस समय देश के 33 राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में लागू है और इससे 23,000 से अधिक सरकारी वा निजी अस्पताल जुड़ चुके हैं। 3. 0९५लपंफषिगा 0 फिट छि080 2९8 (व्यापक क्षेत्र का वर्णन): 2 वीं शताब्दी में भारत के ग्रामीण क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाओं को विस्तार देने के बहुत सारे. प्रयासों के बाद भी. अभी. बहुत सी. समस्याएं बरकरार हैं। एक. ओर स्वास्थ्य पेशेवरों और संसाधनों की कमी है तो दूसरी ओर ग्रामीण क्षेत्रों के निवासियों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता शहरी क्षेत्रों के निवासियों की अपेक्षा काफी कम है। यहीं कारण है कि. ग्रामीण अपनी स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति लापरवाह रहते हैं। सरकार जिन सुविधाओं और कार्यक्रमों को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाना चाहती है, वे पूरी तरह उन तक नहीं पहुंच पाते। इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य कार्यक्रमों को लेकर उनमें जागरूकता की कमी है। जिन स्थानों पर जागरूकता का स्तर बेहतर है, वहां ग्रामीण क्षेत्रों के लोग तुलनात्मक रूप से बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं प्राप्त कर रहे हैं। स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं के प्रति ग्रामीणों को जागरूक कर और ग्रामीणों के लिए सरकार की. ओर

Lovsharma.

से. चलाये. जा. रहे कल्याणकारी कार्यक्रमों की. जानकारी जनसंचार माध्यमों की मदद से उन तक पहुंचा कर समस्याओं का हल निकाला जा सकता है। सरकार ने देश की. आर्थिक रूप से कमजोर आबादी को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं ग। प्रदान करने के उद्देश्य से जो कार्यक्रम चलाये हैं, उनमें सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम है आयुष्मान भारत योजना। इस योजना के बारे में जनसंचार माध्यमों की मदद से ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ाकर अधिक से अधिक पात्रों को. योजना का लाभ दिलाया. जा सकता है। कोरोना वैश्विक महामारी के इस कालखण्ड में इस अध्ययन की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। स्वास्थ्य के प्रति लोगों में जागरुकता के प्रसार के लिए केन्द्र तथा राज्य सरकारें सदा से ही कृतसंकल्प रही हैं। गौरतलब है कि जनसंचार माध्यमों के द्वारा स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रचार-प्रसार किया जाता है लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में वर्तमान तकनीकी. युग में भी. आज जनमानस में. स्वास्थ्य. के. प्रति जागरुकता की कमी है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य. के. प्रति जागरुकता उत्पन्न करने हेतु जनसंचार माध्यमों की. भूमिका के उपयोग को बढ़ाना श्रेयस्कर होगा। प्रस्तुत शोध का महत्व इसी में है कि इसके द्वारा आयुष्मान भारत योजना के प्रति ग्रामीणों की जागरुकता एवं जनसंचार माध्यमों की भूमिका का अध्ययन किया जा सकेगा। वर्तमान परिस्थितियों में जहां केन्द्र तथा राज्य सरकारें संयुक्त रूप से प्रयास कर आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के लोगों को आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवाने की कोशिश कर रही हैं और स्वास्थ्य संरचनाओं के विस्तार का प्रयास कर रही हैं तो ऐसे में जनमाध्यमों के द्वारा ग्रमीणों को जागरूक कर इन सुविधाओं की जानकारी उपलब्ध कराकर योजना की सफलता को बढ़ाया जा सकता है। योजना का लाभ लेने में आ रही समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सरकार द्वारा उनके निराकरण की रणनीति तैयार की जा सकती है। उपरोक्त आधार पर स्पष्ट है कि प्रस्तुत शोध विषय समय की मांग के अनुसार शोध हेतु एक उपयुक्त विषय सिद्ध होगा। अध्ययन से. सामाजिक लाभ- अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो का. भविष्य में भारत सरकार, राज्य सरकार, आईसीएमआर या स्वास्थ्य विभाग द्वारा इनका उपयोग करते हुए आसानी से ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य से जुड़े कार्यक्रम को लेकर जागरुकता की. रणनीति तैयार करने में मदद ली जा सकती है। 2 4. (ुल्लॉप्टड 0 फीट डरते (अध्ययन के उद्देश्य): ..... ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य संदेशों की उपलब्धता एवं ग्रामीणों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का. अध्ययन करना । 2. ... स्वास्थ्य. जागरूकता. कार्यक्रम की उपलब्धता एवं. ग्रामीर्णो में स्वास्थ्य के प्रति 'सजगता का अध्ययन करना। 3. जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता एवं ग्रामीणों तक स्वास्थ्य सम्बन्धी संदेशों की पहुंच का अध्ययन करना। 4... ग्रामीण क्षेत्रों में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता. एवं ग्रामीणों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना । 5. ग्रामीण पुरूषों एवं महिलाओं में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना। 6. उच्च शिक्षित ग्प्रमीण पुरूषों एवं अल्प शिक्षित ग्रामीण पुरूषों में आयुष्मान भारत योजना के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना | 5. किल52ली ल0त00छूए (शोध पद्धति): 'जनसंख्या- प्रयागराज जनपद की समस्त ग्राम पंचायतें । आंकड़ा संग्रहण विधि- इसके लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा। प्रयुक्त उपकरण- अनुसंधान हेतु आकड़ों के संग्रहण के लिए निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा- - साक्षात्कार अनुसूची - अवलोकन अनुसूची -. प्रश्नावली आंकड़ों के स्रोत- निम्न स्रोतों से आंकड़ों का संग्रहण किया जायेगा- प्राथमिक सोत- ग्रामीणों से अनुसूची के माध्यम से प्राप्त आंकड़ें। द्वितीयक स्रोत- सरकारी एवं. गैर सरकारी संस्थाओं के. कार्यालय अभिलेखों द्वारा उपलब्ध आंकड़े । न्यादर्श और न्यादर्शन प्रविधि - 3 सामाजिक एवं व्यावहारिक विज्ञानों में कोई भी अनुसंधान समग्र की समस्त इकाई पर करना प्रायः सम्भव नहीं होता है, क्योंकि विस्तृत क्षेत्रों में फैली हुई समग्र की प्रत्येक इकाई से सम्पर्क करना प्रायः कठिन होता है। समय, श्रम और धन की सीमाओं के कारण समग्र. से. पर्याप्त. इकाईयों का. चयन कर लिया. जाता है। ये. चयनित इकाईयां प्रतिदर्श का निर्माण करती है और समग्र का समुचित प्रतिनिधित्व करती हैं । प्रस्तुत अध्ययन में 400. ग्रामीर्णो का चयन प्रतिदर्श के रूप में आंकड़ों के संकलन हेतु किया. जायेगा। अतः वैज्ञानिक आधार पर विश्वसनीय निष्कर्ष प्राप्त करने हेतु सामान्य दैव निदर्शन प्रणाली पर आधारित होकर प्रयागराज जनपद के 23 में से 04 विकास खण्डों का चयन किया जायेगा। चयनित विकास खण्डों के कुल ग्राम पंचायतों में से सामान्य दैव निदर्शन प्रणाली के आधार प्रत्येक विकास खण्ड से 05-05 ग्राम पंचायतों. (कुल 20. ग्राम पंचायत) का. चयन किया. जायेगा। इसी प्रकार उद्देश्यपूर्ण दैव निदर्शन विधि पर आधारित होकर चयनित 20 ग्राम पंचायतों से निदर्शन के रूप में प्रत्येक गांव से 20-20 प्रतिदर्श का चयन किया जायेगा। प्रतिदर्श में लगभग 50 प्रतिशत संख्या स्त्रियों की और 50 प्रतिशत संख्या पुरुषों की रहेगी। इस प्रकार कुल प्रतिदर्श 400 होगा, जिनमें पुरुषों की संख्या 200 एवं महिलाओं की संख्या 200 होगी | आंकड़ा संकलन प्रक्रिया एवं प्रयुक्त सांख्यिकीय विश्लेषण प्रविधि - उत्तरदाताओं में मात्र साक्षर और कम शिक्षित ग्रामीणों के होने के कारण प्राथमिक आंकड़ों के संकलन के लिये साक्षात्कार अनुसूची की प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा। अध्ययन के दौरान आवश्यकतानुसार द्वितीयक आंकड़ों का संकलन साहित्य सर्वेक्षण, स्वास्थ्य विभाग के कार्यालय अभिलेख, सम्बन्धित सरकारी विभागों की वेबसाईट की मदद से किया जायेगा। प्रस्तुत शोध में संकलित तथ्यों की प्रकृति के आधार पर संभव सीमा तक सांख्यिकीय विधियों द्वारा विश्लेषित किया. जायेगा। आंकड़ों को प्रस्तुत करने हेतु वर्गीकरण एवं सारणीयन की पद्धति का. प्रयोग किया. जायेगा। संकलित तथ्यों को.

LNsharma.

समानता एवं भिन्नता . के. आधार . पर. वर्गीकृत. किया. जायेगा। इन. वर्मकृत . तथ्यों. को... उनकी ग4. आवृत्तियों के आधार पर सारणीबद्ध कर प्रस्तुत किया जायेगा। तत्पश्चात् आंकड़ों की प्रकृति के अनुरूप उपयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग कर प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण किया. जायेगा। आवश्यकतानुसार आंकड़ों के विश्लेषण हेतु कम्प्यूटर की सहायता ली जाएगी । अध्ययन की परिसीमाएं- अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जनपद के ग्रामीण क्षेत्र के चयनित ग्राम पंचायत में निवास करने वाले ग्रामीण लोगों से ही प्राप्त आंकड़ों के आधार पर अध्ययन के निष्कर्ष प्राप्त किये जायेंगें । अध्यायीकरण- प्रथम- प्रस्तावना 'द्वितीय- सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण कृतीय- पद्धति और प्रक्रियायें चतुर्थ- विश्लेषण और व्याख्या पंचम- निष्कर्ष एवं सुझाव 7. संदर्भ ग्रन्थ सूची पा.परिशिष्ट 6. छफृन्लंहते 0प्राट0ा€ 0 ९ रि९५९8ा0 (शोध के अपेक्षित निष्कर्ष): ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों के विस्तार और स्वास्थ्य से जुड़ी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के माध्यम से राष्ट्रीय विकास और सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्यों की प्राप्ति सम्भव है। प्रस्तुत अध्ययन में यह निष्कर्ष सामने आने का. अनुमान है कि. प्रयागराज जनपद के. ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य. के . प्रति जागरूकता, सजगता. और आयुष्मान भारत योजना के बारे में जानकारियां उपलब्ध कराने में जनसंचार माध्यम किस सीमा तक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। आयुष्मान भारत योजना और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में जागरूकता को लेकर ग्रामीणों की जानकारी का. स्तर कितना. है। जनसंचार माध्यमों की. अनुपस्थिति की. परिस्थिति में 5 ग्रामीणों की जागरूकता का स्तर कितना है, इस बात की भी जानकारी प्रस्तुत अध्ययन के. माध्यम. से. मिलने. की. सम्भावना है।_ जनसंचार माध्यमों के अतिरिक्त अन्य किन माध्यमों से ग्रामीणों को स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलती है, यह जानकारी भी अध्ययन के माध्यम से सामने आ सकने का अनुमान है। अध्ययन के माध्यम से यह परिणाम भी सामने आने का अनुमान है कि स्वास्थ्य जागरूकता के लिए चलाये जा रहे कार्यक्रमों की ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निःशक्त सामाजिक वर्गों तक कितनी पहुँच है और इसके माध्यम से. ग्रामीणों में स्वास्थ्य देखभाल को लेकर किस सीमा तक सजगता उत्पन्न हुयी है। सरकार द्वारा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में चलाई जा रही योजनाओं और ग्रामीणों को प्रदान की जा रही स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता के बारे में भी. जानकारी मिलने का अनुमान है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले निःशक्त समुदाय में जनसंचार माध्यमों की उपलब्धता और उनकी आर्थिक स्थिति के बीच के सह संबंध भी सामने आने का. अनुमान है। जनसंचार के कौन से माध्यम वर्तमान समय में निःशक्त ग्रामीण जनसंख्या के बीच सुलभ हैं. और किन जनसंचार माध्यमों तक उनकी पहुँच नहीं है, यह जानकारी भी प्रस्तुत अध्ययन में सामने आने का अनुमान है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों का उपयोग आयुष्मान भारत योजना के प्रचार-प्रसार और स्वास्थ्य. जागरूकता. कार्यक्रमों. के आयोजन के दौरान किया जा सकेगा। स्वास्थ्य विभाग की ओर से अपनाये जाने वाले संचार अभियानों में इन निष्कर्षों के आधार पर अपेक्षित परिवर्तन कर सरकार वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए भविष्य में सकारात्मक कदम उठा सकती है। रिटलिटाटट5:]. सिंह, प्रो. श्यामघर, (2009), "वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व", सपना अशोक प्रकाशन वाराणसी | 2. पाराशर, रामकृष्ण, पाराशर, नकुल, (992), "कृषि पत्रकारिता का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्ष" हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय प्रकाशन, नई दिल्ली | 3. तिवारी, डॉ. अर्जुन, (999), "कृषि एवं ग्रामीण विकास पत्रकारिता" संजय बुक सेंटर वाराणसी प्रकाशन । 6 4. उपाध्याय, डॉ... हरीश. चंद्र, (2009), _ "सामाजिक. सर्वेक्षण, _ अनुसंधान. एवं सांख्यिकी" एटलांटिक पब्लिशर्स, नई दिल्ली | 5. पाण्डेय, उमा, (2073), "शोध प्रस्तुति" एनएचएस प्रकाशन, नई दिल्ली। 6. जरारे, डॉ. विजय, (995), "शोध प्रणाली" एबीडी पब्लिशर्स, जयपुर । 7. मुखर्जी, खींद्रनाथ, (2009), "सामाजिक शोध एवं सांख्यिकी" विवेक प्रकाशन, नई दिल्ली | 8. वोहरा, वंदना, (2009), "शोध प्रविधि** ओमेगा पब्लिकेशंस । 9. सिंह, अरुण कुमार, (206), "मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ"*, मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स, नई दिल्ली । 0. भानावत, डॉ. संजीव, (2008), "संचार शोध प्रविधियां"" यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्राइवेट लिमिटेड, जयपुर ।]. शर्मा, रामनाथ और शर्मा, राजेंद्र कुमार, (2022), "सामाजिक सर्वेक्षण और अनुसंधान की. विधियाँ और प्रविधियाँ""_ अटलांटिक पब्लिशर्स ऐंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्राइवेट लिमिटेड । 2. एल. वत्ता, बी. एल. ढाका. और के. चायल, (2070), "कन्टेठ एनालिसिस ऑफ फार्म मैगजिन" ॥॥ 05://#0/0#/.50700.00/0000ा87/32550802/04 3. पोखरियाल, एस. (2022, मई 05). "आयुष्मान योजना : सेहत संग बचत की. संजीवनी, निम्न आय वर्ग के लोगों को. मिल. रही. राहत" :. जागरण. फाफुड://फफफा तुंवाओ,ए0/टफताक एव -बफपरडताका-छणुंकाइ-लॉडपिणिनएफनाटफाह- ाण्फ्फू-लणुटिनुवाशा-झुल्लंबा-22685955.0 4. उिध्वणण, हि, 5पाहाताश, (205), *किवाप एवार पाणिकाधणा 0 कपाव। 9९06 ता औतातपाव शिक्षतंहञ त्ताी उ, हलंव। कलिशाएह (0 (फांध०ण तांड्फाट, गिरते पाहडांड, ऊां '/लाधिवटिडफाबाव थी 5. पंतक्षाध् ापाकषा8 द, हैजिकषाब0ा व. सिलाफिट्ड है, सिक्षाट्कि (7. 0855 ताट्तीघ पटाएटाफाइ लि. फाणाणाइ निधि डा, _ (०लाकषाट 089855 . उकाडा . रिटस, 2005 गा 20: (3):000004775. तन: 0.002/465858,0004775.फ़02, एताए: 6034948, 6. फल (0, घलाएंल है, रिवशाणात पिरि, ताइलाएटा है, (लक है, र0का आ, 50लं8 पराक्षाइहप्ाड ाफिलापणाड 0 फाटास5९ निधि / 577 ।९ड08 पफुिदित आजा पाहा

ाए पव९९ इ९2 पी हा) कार ताशह-ठ-लि8€ प्रकाइइशातट' ाणाला, (०टपाशाट 80852 505 स्व. 207 5दकू
ए.20(9):00009337, तन: 0.0020465858.00009337. शनाए: 2907734; गन: एए7994256, 7 7. निषाघाला छि, (0055815
हि. लाली, सिक्षिएक्षी 5. (200). (ताक्षवलांडीएड काठ 0णटणाट्ड 0 फुफांट ट्याफकछाड भंफ् ाट्ते भ ाफ़ाणपा फिट प्रघट
एव किाफिफटड पा ०पफ्कंलाड का ांछीनाटणाट 00पांट5, तह एटा फ़ाहिलांणाड ि ड28525. पं ाधाणिकां ५४, 0600
दक्षता ऐ. ि ट्फटा-फरेलेटट है. फाटिएटाणिा 0 पा00ीफि 52३08] पांडीट ७लीकसं०णाई णि' फ़ार/टाा पिषि फा परणारॉख5
कप. (0लाशाट 2व89850 0 5 रिटए, 8. डी, ै ताएं। दिपाआा, (2020) पिया वाट विलंपंटड बाते पाला पीपडवीणि का 88087
तांड्चाए *. शत पाटडंड, जिक्षाबाव5 निवितप (फांधटाडां ि, 9. क्षति नणीक्षाकत उक्षुंह्त तणीक्षापा8त चफाइफाका, (2020)
2 पते 0 5008 शलापंडटा।हाड शत व फाऐ80 0 पा आह 0 रक्षातंल्ते तांड् ाए, गित पाहडांड, 5फाकाएं रिक्षाक्षाक्षाएं पटटापि
किधिपाा08 [पांच्टाड कि, 20. दलाल, ते. & णीक्षा व. 08, (2008), छिफाहाा्ड फुलाडुल्लीफ्टड ला सिवा पा टवंणा :
प् ाह्वापाइ, ट्फार, फ0फला, पिट्फत/णा६ : रि०ा 22, 2. परफिड://प्व्लताक्षा़जिक्षाश ता. छु0४./घ00पॉ-एऽ ⌋⌊ फत/णा६ :
रि०ा 22, 2. परफिड://प्व्लताक्षाजिक्षाश

LNSharma